नारी तू नारायणी

जिस तरह से मां दुर्गा ने दानवों का विनाश किया, आज देश में बहुत सी महिलाएं बुराइयों का विनाश करने में जुटी हैं। ये अपने-अपने हिस्से की लड़ाइयां लड़ रही हैं और समाज को नई दिशा देने में जुटी हैं।

किसी विद्वान लेखक ने बिल्कुल सही कहा है कि इस दुनिया में नारी से बड़ी कोई शक्ति नहीं। लेकिन कोई नारी कितनी स्ट्रॉन्ग यानी शक्तिशाली है, यह जानना हो तो उसे टी बैग की तरह उबलते पानी में छोड़ना पड़ता है यानी नारी की असली शक्ति का परिचय तब मिलता है, जब वो विपरीत परिस्थिति में होती है या किसी को मुसीबत में देखती है। मां दुर्गा भी देवताओं को मुसीबत में देखकर ही अपने असली रूप में आई थीं। नवरात्र के अवसर पर चर्चा करते हैं ऐसी ही कुछ शक्तिस्वरूपा महिलाओं की .....

सिन्धुताई सपकल

अनाथों की मां के नाम से मशहूर मुंबई की सिंधुताई सपकल ने अपनी पूरी जिंदगी अनाथों के लिए होम कर दी। पहली प्रेग्नेंसी के अंतिम महीने में पति द्वारा त्याग दी गई सिंधुताई को गोशाला में अपनी बेटी को जन्म देना पड़ा। बच्ची के जन्म के बाद वह कई किलोमीटर पैदल चलकर अपनी मां के घर पहुंची तो मां ने भी आश्रय देने से इंकार कर दिया। हैरान और लाचार सिंधुताई को रेलवे स्टेशन पर भीख मांगनी पड़ी। वहां उन्हें पता चला कि उनकी बच्ची की तरह सैकड़ों बच्चे अपने मां-बाप के प्यार से महरूम हैं। उन्होंने ऐसे अनाथ बच्चों की मां बनने का निश्चय किया। आज की तारीख में वह 1050 अनाथ बच्चों की मां है।

शाहीन मिस्त्री

टीच फॉर इंडिया की मुख्य कार्यकारी और आकांक्षा संगठन की संस्थापक शाहीन मिस्त्री का जन्म मुंबई के एक पारसी परिवार में हुआ। हालांकि उनका पालन-पोषण विदेश में हुआ फिर भी उन्हें मुंबई से सदा लगाव रहा। उन्हें इस बात से बहुत पीड़ा हुई कि मुंबई की बस्तियों में रहने वाले बच्चे न तो ढंग से शिक्षा पा रहे हैं और न ही आज के जॉब मार्केट के लायक हुनर सीख पा रहे हैं। इसीलिए 1989 से आकांक्षा नामक संस्था की शुरुआत की, जिसमें गरीब बच्चों को स्कूल के बाद ट्यूशन की सुविधा दी। उनके प्रयास को लोगों ने खूब सराहा। इस प्रोजेक्ट की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि 2008 में उन्होंने टीच फॉर इंडिया के नाम से एक नया संगठन खोल लिया। इसमें 1700 प्रशिक्षित लोग

सात शहरों के गरीब बच्चों को पढ़ा रहे हैं। शाहीन कई ऐसी ही सामाजिक शैक्षिक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं और शिक्षा की ज्योति फैला रही हैं। इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेचेस्टर (इंग्लैंड) से मास्टर्स की डिग्री हासिल की है।

प्रीति पटकर

मुंबई के कमाठीपुरा रेड लाइट एरिया में छोटे-छोटे बच्चे इधर-उधर घूमते है और कई बार तो मजबूरी में उन्हें अपनी मां के लिए ग्राहक भी लाना पड़ता है। वे पढ़-लिख नहीं पाते। इन्हें देखकर एक साधारण हाउसवाइफ प्रीति पटकर का मन द्रवित हो उठा। उन्होंने इन बच्चों के लिए कुछ करने की ठानी। वर्ष 1986 में उन्होंने अपना संगठन प्रेरणा बनाया और इसके माध्यम से सेक्स वर्कर्स के बच्चों को जीवन सुधारने का बीड़ा उठाया। उन्हें यह जानकर और भी हैरानी हुई कि तीन पीढ़ी की औरतें एक साथ एक छत के नीचे वेश्यावृत्ति करती हैं। उन्होंने इनके जीवन के सुधार के लिए भी यथासंभव प्रयास किया। यहां काम करने वाली सेक्स वर्कर्स के बच्चों के लिए नाइट केयर सेंटर खोला।

लक्ष्मी अग्रवाल

नई दिल्ली के साधारण मध्यम वर्गीय परिवार की बेटी लक्ष्मी महिलाओं पर एसिड अटैक के विरोध का पर्याय बन चुकी हैं। वह खुद 15 वर्ष की आयु में एक 32 वर्षीय पुरुष की क्रूरता और वहशियत का शिकार हो चुकी हैं, जिसका प्रणय निवेदन ठुकराने पर उन्हें एसिड अटैक का शिकार होना पड़ा। लक्ष्मी कमजोर नहीं पड़ीं और न ही हार कर घर पर बैठीं। उन्होंने 27000 लोगों के हस्ताक्षर इकट्ठे करके सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की और एसिड की खुली व बेरोकटोक बिक्री पर पाबंदी लगाने की मांग की। सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका स्वीकार कर ली और केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों को एसिड की बिक्री पर नियंत्रण लगाने के आदेश दिए। लक्ष्मी अग्रवाल छांव फाउंडेशन की निदेशक हैं। उनका यह एनजीओ एसिड अटैक की शिकार महिलाओं को हर संभव मदद देता है। वर्ष 2014 में उन्हें इंटरनेशनल वीमन ऑफ करेज अवार्ड मिला, जो मिशेल ओबामा ने दिया।

पूजा तापड़िया

मुंबई की पूजा तापड़िया वैसे तो एक कॉमर्स ग्रेजुएट हैं और ग्राफिक डिजाइन में डिप्लोमा कर चुकी हैं लेकिन उन्हें उनकी डिग्री या पेशे की बजाय समाजसेवा के उत्कृष्ट कार्य के लिए जाना जाता है। पूजा को बाल यौन शोषण के घोर विरोधी के रूप में भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी पहचान मिल चुकी है। बेहद कम उम्र के मासूम बच्चों का यौन शोषण होता देख पूजा कमर कस कर इनकी रक्षा करने और इस घृणित अपराध का विरोध करने उतर पड़ीं। वर्ष 2006 में उन्होंने अपना एनजीओ 'अर्पण' शुरू किया। आज उनकी टीम में कई लोग हैं। पूजा कम से कम सत्तर हजार बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से और दो लाख दस हजार बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से बचा चुकी हैं। वर्ष 2010 में उन्हें दिल्ली में करणवीर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। ऑस्ट्रिया के एक संग्रहालय में उनका प्रोजेक्ट लोगों के अवलोकन के लिए रखा गया है। फिलहाल वे कई बड़ी संस्थाओं में सहयोगी भी हैं।

रंगू शौर्या

कंचनजंघा उद्धार केंद्र नामक एनजीओ की संस्थापक रंगू शौर्या अब तक 500 से ज्यादा किशोरियों व बच्चियों को जिस्मफरोशी के कारोबार के दलदल में जाने से बचा चुकी हैं, जिनमें से ज्यादातर 18 साल से कम उम्र की हैं। उन्होंने वर्ष 2004 से यह काम शुरू किया, जिसके बाद आज तक पीछे मुड़ कर नहीं देखा। मासूम बेटियों को जिस्मफरोशी कराने वाले तस्करों के जाल में फंसने से बचाने और उनके जाल से निकालने के लिए उन्हें कई बार जान की बाजी भी लगानी पड़ी। अपने इस साहस के लिए उन्हें वर्ष 2011 में गोडफ्रे फिलिप्स नेशनल ब्रेवरी अवार्ड से नवाजा गया। रंगू के पुनीत कार्य के लिए उन्हें कई सामाजिक संगठनों ने सम्मानित किया है। उन्हें राष्ट्रपति द्वारा वीमन अचीवर्स ऑफ इंडिया अवॉर्ड भी मिला है।

शिखर चंद जैन

पूजा तापड़िया

मुंबई की पूजा तापड़िया वैसे तो एक कॉमर्स ग्रेजुएट हैं और ग्राफिक डिजाइन में डिप्लोमा कर चुकी हैं लेकिन उन्हें उनकी डिग्री या पेशे की बजाय समाजसेवा के उत्कृष्ट कार्य के लिए जाना जाता है। पूजा को बाल यौन शोषण के घोर विरोधी के रूप में भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी पहचान मिल चुकी है। बेहद कम उम्र के मासूम बच्चों का यौन शोषण होता देख पूजा कमर कस कर इनकी रक्षा करने और इस घृणित अपराध का विरोध करने उतर पड़ीं। वर्ष 2006 में उन्होंने अपना एनजीओ 'अर्पण' शुरू किया। आज उनकी टीम में कई लोग हैं। पूजा कम से कम सत्तर हजार बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से और दो लाख दस हजार बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से बचा चुकी हैं। वर्ष 2010 में उन्हें दिल्ली में करणवीर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। ऑस्ट्रिया के एक संग्रहालय में उनका प्रोजेक्ट लोगों के अवलोकन के लिए रखा गया है। फिलहाल वे कई बड़ी संस्थाओं में सहयोगी भी हैं।